पाठ 2 **अक्टूबर 7-13**

विवाद

सब्त अपराह्न **अक्टूबर 7**

इस सप्ताह के अध्ययन के लिये पढ़ें : इब्रा० 8: 6, मत्ती 19: 17, प्रका० 12: 17, लै० व्य० 23, प्रेरित 15: 1-29, गला० 1: 1-12

याद वचन : *"इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई; परन्तु अनुग्रह, और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची"*(यूहन्ना 1: 17)

प्रारंभिक कलीसिया अधिकत्तर यहूदियों से बनी थी जिन्होंने एक क्षण के लिये भी नहीं सोचा कि यहूदी मसीहा, यीशु को ग्रहण करने के द्वारा वे किसी भी तरह से अपने पित्रों के विश्वास से या परमेश्वर द्वारा अपने लोगों से की गई वाचा प्रतिज्ञाओं से लौट रहे थे। जैसा यह पाया जाता है, वे सही थे। प्रारंभिक यहूदी विश्वासियों की समस्या यह थी कि यदि वे यीशु को ग्रहण करने के लिये मसीही बनें। उनमें से बहुतों की समस्या (मुद्दा) थी कि यदि अन्य जाति मसीह को ग्रहण करने से पहले यहूदी बन जायें।

केवल बाद ही में यरूशलेम की सभा में पक्का जवाब था। उन्होंने निर्णय लिया कि अन्यजातियों को ढेर-सारे नियमों और कानूनों से परेशान नहीं करेंगे। वह यह कि अन्यजातियों को यीशु को ग्रहण करने के लिये पहले यहूदी बनने की आवश्यकता नहीं थी।

निर्णय के बावजूद भी, हालांकि कुछ शिक्षकों ने कलीसियाओं में मन फिराए अन्यजातियों को इन नियमों और व्यवस्थाओं को पालन करने के लिये उकसाते थे, इसमें खतना की विधि भी शामिल थी (हू-ब-हू वैसी ही प्रक्रिया नहीं जो मसीहियत में शामिल होने के लिये बने खासकर एक वयस्क के लिये अपील करना)। वह यह, कि वे सोचते थे कि इन अन्यजातियों को वाचा की प्रतिज्ञा में भागीदार होने के लिये बहुत से नियम कानूनों को मानना चाहिए जो इस्राएल के राष्ट्रमंडल के भागीदारों के लिये एक उचित माँग थी ।

कौन-सी समस्याएँ थीं, और उनका समाधान किस प्रकार होना था?

रविवार **अक्टूबर 8**

बेहतर वाचा

पढ़ें इब्रा० 8:6 यहाँ संवाद क्या है? हम कैसे समझते हैं कि ये "बेहतर वाचाएँ" क्या हैं?

संभवत: नये नियम और पुराने नियम के धर्म में बड़ा फर्क एक यथार्थ है कि नये नियम का युग नासरत के यीशु, मसीहा के आने के द्वारा प्रस्तुत हुआ। वह परमेश्वर द्वारा उद्धारकर्त्ता होने को भेजा गया। मनुष्य बचाये जाने की आशा करते हुए उसे इंकार नहीं कर सका। केवल प्रायश्चित के द्वारा जिसे उसने उपलब्ध कराया उनके पाप क्षमा हो सकते थे। केवल मसीह की सिद्धता के अध्यरोपण से वे परमेश्वर के सामने निर्दोष खड़े हो सकते थे। दूसरे शब्दों में उद्धार यीशु की धार्मिकता से था और किसी अन्य से नहीं।

पुराने नियम के संत मसीहाई काल और उद्धार की प्रतिज्ञा की आशीषों को देख आशा करते थे। नये नियम के काल में लोग इस प्रश्न का सामना करते थे कि उनके उद्धारकर्त्ता नासरत के यीशु को क्या उन्हें स्वीकार करना चाहिए जिसे परमेश्वर ने मसीहा

के रूप में भेजा था? यदि उन्होंने उस पर विश्वास किया– यह कि यदि उन्होंने उसे स्वीकारा कि वास्तव में वह कौन था और उन्होंने स्वयं को उस पर समर्पित कर दिया – वे उसकी धार्मिकता के कारण बचाये जाएँगे जिसे वह मुफ्त में उन्हें प्रदान करता है।

इसी दौरान, नये नियम में नैतिक मांग में कोई बदलाव नहीं हुआ, क्योंकि ये परमेश्वर और मसीह के चरित्र में स्थापित थे। परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारी नई वाचा के साथ-साथ पुरानी वाचा के साथ बराबर हिस्सेदारी है।

पढ़ें मत्ती 19: 17; प्रका० 12: 17; 14: 12; एवं याकूब 2: 10-11। नये नियम में नैतिक व्यवस्था के विषय में पदस्थल हमें क्या बतलाते हैं?

इसी समय धार्मिक एवं नैतिक व्यवस्थाओं के संपूर्ण भाग विशिष्ट रूप से इस्राएली थे और विशिष्ट रूप से पुरानी वाचा के साथ बांधे हुए थे, और सब कुछ यीशु एवं उसकी मृत्यु और महायाजक के तौर पर सेवकाई बंद हो गई, और नई व्यवस्था लायी गई, जो "बेहत्तर प्रतिज्ञाओं" पर आधारित थी।

समझने के लिये दोनों यहूदी एवं अन्यजाति की मदद करना जो यहूदीवाद से मसीहित में परिवर्तन होने में शामिल था रोमियों की किताब में पौलुस के मुख्य लक्ष्यों में से एक था। परिवर्तन के लिये यह समय लेता। बहुत से यहूदी जिन्होंने यीशु को ग्रहण कर लिया था, अभी भी बड़े बदलावों के लिये तैयार नहीं थे, जो आ चुके थे।

आपकी प्रिय बाइबल प्रतिज्ञाओं में से कुछ कौन-से हैं? कितनी बार आप उनका दावा करते हैं? कौन-से चयन आप कर रहे हैं जो आपके जीवन में इन प्रतिज्ञाओं की परिपूर्णता के रास्ते में खड़ा रह सके?

सोमवार **अक्टूबर 9**

यहूदी नियम एवं व्यवस्थाएँ

जैसे कि समय अनुमति देता है, लैव्यव्यवस्था की किताब पर नजर दौड़ाएँ। (उदाहरणार्थ देखें लैव्यव्यवस्था 12,16,23) जब आप इन नियमों एवं कानूनों और संस्कारों के विषय पढ़ते हैं कौन से विचार आपके मन में आते हैं। नये नियम के काल में इन में से बहुत से नियम-कानूनों एवं धार्मिक रीतियों को मानना क्यों असम्भव था?

पुराने नियम की व्यवस्थाओं को विभिन्न वर्गों में वर्गीकृत करना हमारे लिये आसान है: (1) नैतिक व्यवस्था, (2) रैतिक व्यवस्था, (3) नागरिक व्यवस्था, (4) नियम एवं विचार, और (5) स्वास्थ्य की व्यवस्थाएँ (नियम)।

यह वर्गीकरण बनावटी भाग है। वास्तव में इन वर्गीकरण का आंतरिक संबंध है, और यहाँ पर विचारनीय अंशछादन है। पुराने काल के लोग ने इन्हें अलग और विशिष्ट रूप से नहीं देखा ।

नैतिक व्यवस्था दस आज्ञाओं द्वारा सारांश रूप ले लिये गये हैं (निर्ग० 20: 1-17)। यह व्यवस्था मानवता की नैतिक मांगों की पूर्ति करती है। ये दस निर्देश बाइबल की प्रथम पाँच संपूर्ण किताबों में विभिन्न नियमों एवं निर्णयों को विस्तृत रूप देते एवं लागू करते हैं। ये विस्तारण दिखाते हैं भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में परमेश्वर की व्यवस्था को मानने का क्या अर्थ है। नागरिक व्यवस्थाएँ असंबद्ध नहीं हैं। ये भी नैतिक व्यवस्था पर आधारित हैं। ये एक नागरिक का नागरिक सत्ताधारियों एवं सह नागरिकों के बीच संबंध को बतलाते हैं। वे विभिन्न अपराधों के दण्डों का नामकरण करते हैं।

रीति संबंधी (रैतिक) व्यवस्था मंदिर की सेवकाई को नियंत्रित करती थी, यह भिन्न-भिन्न दानों एवं व्यक्तिगत नागरिक की जिम्मेदारियों की व्याख्या करती थी। पर्व के दिन स्पष्ट किये जाते हैं और उनके अनुपालन की व्याख्या की जाती है।

स्वास्थ्य के नियम दूसरे नियमों को दबा देते हैं। विभिन्न नियम (व्यवस्था) जो अशुद्धता से संबंधित हैं रैतिक अशुद्धता का वर्णन करते हैं, और फिर भी ये इसके आगे चले जाते हैं ताकि स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य के सिद्धान्तों को शामिल किया जा सके। शुद्ध और अशुद्ध मांस से संबंधित व्यवस्थाएँ शारीरिक विचारों पर आधारित हैं।

जबकि यहूदी संभवत: विस्तृत रूप से इन व्यवस्थाओं के विषय सोचते थे कि ये सभी परमेश्वर की ओर से एक पैकेज या पार्सल की तरह आई हुई हैं। किसी भी व्यक्ति (महिला या पुरुष) को मानसिक रूप से निश्चित विशिष्टताएँ बनानी चाहिए। दस आज्ञाएँ सीधे तौर पर परमेश्वर द्वारा लोगों को कही गई थीं। यह उन्हें खास महत्त्व के तौर पर अलग करता। अन्य व्यवस्थाएँ मूसा के द्वारा दी गई। मंदिर की सेवकाई जारी रखी जा सकती थी, केवल तब जब मंदिर कार्य प्रणाली में हो।

नागरिक व्यवस्थाएँ, कम से कम बड़े भाव में, यहूदियों ने जब अपनी स्वतंत्रता को खो दिया और दूसरे राष्ट्र के नागरिक नियंत्रण में आ गये, लागू नहीं की जा सकीं। मंदिर के विनाश के बाद बहुत सी विधि व्यवस्थाएँ लोप हो गईं। मसीह के आने के बाद भी बहुत-सी समानताएँ अपनी असमानताओं में समा चुकी थी और वैद्यता समाप्त हो चुकी थी।

मंगलवार **अक्टूबर 10**

मूसा की रीति के अनुसार

पढ़ें प्रेरित० 15: 1 कौन-सा विषय मतभेद पैदा कर रहा था? कुछ लोगों ने क्यों सोचा कि यह यहूदी राष्ट्र के लिये नहीं था? देखें उत्प० 17: 10

बहुत सी आत्माओं को मसीह के लिए जीतने के ईमानदार प्रयास में जब चेले सेवकों एवं ले सदस्यों के साथ अन्ताकिया में मिल गये, यहूदा से खास यहूदी विश्वासीगण "फरीसियों के पंथ से" एक प्रश्न को पेश करने में सफल रहे जिसने कलीसिया में विवाद को शीघ्र फैलाने में अगुवाई की और अन्यजाति विश्वासियों में व्याकुलता ला दी। बड़े आत्मविश्वास के साथ इन शिक्षकों ने जोर दिया कि बचाये जाने के लिये खतना होना और संपूर्ण विधि व्यवस्था को मानना अति आवश्यक है। आखिरकार, यहूदी हमेशा अपनी ईश्वर प्रदत्त सेवाओं के लिये स्वयं पर घमण्ड करते थे, और बहुतेरे जो मसीह के विश्वास में परिवर्तित हो चुके थे अभी भी महसूस करते थे कि जैसे ईश्वर ने एक बार उपासना की यहूदी शैली को स्पष्ट रूप से बतला दिया था, यह असंभव था कि वह इसके विशेष विवरणों को बदलने के लिये कभी अधिकार दे। वे जोर देते थे कि यहूदी व्यवस्थाएँ और विधियाँ मसीही धर्म के संस्कारों के साथ समाविष्ट होनी चाहिए। वे समझने में धीमे थे कि सभी बलिदान परमेश्वर के बेटे की मृत्यु की पूर्व कल्पना थी, जिसमें समानता - असमानता में मिल जाता है, और इसके बाद मूसा के विधान के संस्कार और विधियाँ बंधन स्वरूप नहीं रह जाते थे।

पढ़ें प्ररित० 15: 2-12 इस विवाद का किस प्रकार समाधान हो सकता था?

"परमेश्वर की ओर प्रत्यक्ष मार्ग दर्शन के लिये ताकते हुए वह (पौलुस) प्रभुत्व को पहचानने के लिये हमेशा तैयार रहता था जो विश्वासियों की मंडली में कलीसिया की सहभागिता में एकीकृत हुए अधिकार प्रदान करता था। वह उपदेश की जरूरत को महसूस करता था, और जब महत्त्व के विषय खड़े होते तो वह इन्हें कलीसिया के सामने रखने में खुश होता था और अपने भाईयों के साथ एक होकर सही निर्णय लेने के लिये ज्ञान हेतु परमेश्वर की खोज करता था।" *-एलेन जी ह्वाईट, द एक्ट्स ऑफ द अपोसल्स, पेज 200*

यह दिलचस्प है कि पौलुस जो अकसर अपने नबूवतीय बुलाहट की बातें करता था, और किस प्रकार यीशु ने उसे बुलाया और उसे अपना काम दिया - वृहत्तर कलीसिया समूह के साथ काम करने को इतना उत्सुक था। यह कि उसकी बुलाहट जो भी हो, उसने महसूस किया कि वह संपूर्ण रूप से कलीसिया का अंश था और इसलिये उसे जरूरी था कि इसके साथ जितना संभव हो काम करे।

कलीसियाई नेतृत्व के प्रति आपका क्या नज़रिया है? आप कितने सहयोगी हैं? सहयोग क्यों इतना महत्त्वपूर्ण है? हम कैसे कार्य कर सकते हैं यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा अनुसार कार्य करे, एक वृहत्तर अंग का स्वतंत्र रूप?

बुधवार **अक्टूबर 11**

अन्यजाति विश्वासीगण

पढ़ें प्रेरित 15: 5-29 सभा किस निर्णय पर पहुँची, और उनका तर्क क्या था?

निर्णय यहूदीवाद के तर्कों के खिलाफ था। ये समूह जोर देते थे कि मनपरिवर्तित अन्यजातियों को खतना होना और संपूर्ण विधि व्यवस्था को मानना जरूरी था, और यह कि "यहूदी व्यवस्था एवं विधियों को मसीही धर्म के संस्कार के साथ समाविष्ट करना चाहिए।"– *एलेन जी० ह्वाईट, द एक्ट्स ऑफ द अपोसल्स, पेज 189*

प्रेरितों 15: 10 में यह टिप्पणी करना रोचक है जिस प्रकार पतरस इन पुरानी व्यवस्थाओं को "जुआ" के तौर पर चित्रित करता है कि उन्हें वहन करना असंभव था। क्या यहोवा जिसने उन व्यवस्थाओं को स्थापित किया, अपने लोगों के लिये जुआ बनाया? कदाचित नहीं, इसके वजाय, वर्षों तक कुछ अगुओं ने अपने मौखिक परंपरा से बहुत से नियमों (व्यवस्थाओं) को आशीषों से बदल दिया वे जो भार समझे जाते थे। सभा अन्यजातियों को इस बोझ से बचाना चाहती थी।

इसे भी ध्यान दें, कि यहाँ पर अन्य जातियों का दस आज्ञाओं को नहीं मानने का कोई प्रश्न ही नहीं था। इन सबके बावजूद, क्या-हम कल्पना कर सकते हैं सभा उन्हें लहू न खाने को कहे परन्तु व्यभिचार या हत्या और ऐसे ही आज्ञाओं के खिलाफ अवमानना ग्रहण योग्य था?

अन्यजाति के विश्वासियों पर कौन-से नियम थोपे जा रहे थे (प्रेरित० 15:20, 29)और क्यों ये विशिष्ट नियम?

यद्यपि यहूदी विश्वासियों को उनके नियमों और परंपरा को अन्य जातियों पर थोपना नहीं था, सभा आश्वस्त होना चाहती थी कि अन्यजाति उन चीजों को नहीं करते थे जो यहूदियों के लिये अप्रिय समझा जाता था जो यीशु में उनके साथ एक थे। इस कारण चेले और प्राचीन (पुरनिए) अन्यजातियों को निर्देश देने को पत्री के द्वारा राजी हुए कि मूरत के आगे परोसा गया मांस, अनैतिक यौन संपर्क, गला घोंट कर मरा हुआ जीव, एवं लहू से बचें। कुछ लोग कहते हैं कि, क्योंकि सब्त पालन खास तौर पर व्याख्या नहीं की गयी थी, यह निश्चित रूप से अन्यजातियों के लिये नहीं था। (निस्संदेह, आज्ञाओं के विरुद्ध झूठ बोलना एवं हत्या खास तौर पर अन्यत्तर व्याख्या नहीं की गई थीं, अत: तर्क का कोई अर्थ नहीं)।

क्या हम, किसी प्रकार से, लोगों पर बोझ बनाते है जो आवश्यक नहीं, परन्तु ईश्वरीय आज्ञा से बढ़कर परंपरा से है? यदि ऐसा है तो, कैसे? सब्त के दिन कक्षा में अपने विचारों को लायें।

बृहस्पतिवार **अक्टूबर 12**

पौलुस और अन्यजाति

यद्यपि परामर्श स्पष्ट है, यहाँ पर वे थे जो अपने रास्ते ही में चलना चाहते थे और जिन्होंने वकालत करना जारी रखा कि अन्यजाति यहूदी परंपराओं और व्यवस्थाओं को माने। पौलुस के लिये यह एक बहुत ही गंभीर मुद्दा था; वह यह कि, यह विश्वास के अच्छे बिन्दुओं को तुच्छ नहीं कह रहा था। यह स्वयं मसीह के सुसमाचार का इंकार बन गया था।

पढ़ें गला० 1: 1-12 कितनी गंभीरता से पौलुस समस्या को देखता है जिसे वह गलातिया में सामना कर रहा है? इस प्रश्न के महत्त्व के विषय में वह हमें क्या बतलाना चाहिए?

जैसे कि पहले ही कहा जा चुका था, यह गलातियों की परिस्थिति थी कि अधिक मात्रा में रोम को भेजी जाने वाली पत्री में विषय सूची प्रोत्साहन करने वाली थी। रोमियों को भेजी जाने वाली पत्री में, पौलुस आगे गलातियों की पत्री के विषय को विकसित करता है। कुछ यहूदी विश्वासी दावा कर रहे थे कि व्यवस्था जिसे परमेश्वर ने उन्हें मूसा के द्वारा दिया महत्त्वपूर्ण थी और अन्यजाति मनपरिवर्तिनों द्वारा पालन करनी चाहिए। पौलुस इसके सही स्थान और कार्य को दिखाने का प्रयत्न कर रहा था। वह इन लोगों को रामे में पैर पसारने देना नहीं चाहता था, जैसे इन्होंने गलातिया में कर लिया था।

यह पूछना अत्यधिक सरलीकरण है कि यदि पौलुस गलातियों और रोमियों में विधि या नैतिक व्यवस्था के विषय बातें कर रहा है। ऐतिहासिक रूप से तर्क यह था कि अन्यजाति धर्म परिवर्तित लोगों को खतना होना और मूसा की व्यवस्था पालन करना चाहिए या नहीं। यरूशलेम की सभा ने इस प्रश्न पर पहले ही अध्यादेश जारी कर दिया था, परन्त कुछ लोगों ने इस निर्णय को मानने से इंकार कर दिया।

बहुतों ने गलातियों एवं रोमियों के नाम पौलुस की पत्रियों में साक्ष्य को पढ़ा कि नैतिक व्यवस्था, दस आज्ञाएँ (वास्तव में चौथी आज्ञा) मसीहियों के लिए बंधन नहीं रह गये हैं। तथापि, वे पत्रियों के बिन्दुओं को, ऐतिहासिक संदर्भ को, तथा मुद्दे जिन्हें पौलुस संबोधित कर रहा था, खो रहे हैं। जैसे कि हम देखेंगे, पौलुस ने जोर दिया कि उद्धार केवल विश्वास के द्वारा था और व्यवस्था पालन से नहीं, यहाँ तक कि नैतिक व्यवस्था भी। फिर भी यह कहना सही नहीं कि नैतिक व्यवस्था का पालन नहीं होना चाहिए। दस आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारिता कभी मुद्दा नहीं रहा; जो इसे मुद्दा बनाते हैं पुन: समकालीन मुद्यों के अवतरणों को पढ़ रहे हैं, जिसपर पौलुस चर्चा नहीं कर रहा था।

आप उनपर क्या प्रतिक्रिया करते हैं जो दावा करते हैं कि सब्त मसीहियों के लिए अब बंधन नहीं रहा है? आप इस प्रकार सब्त की सत्यता को कैसे दिखा सकते हैं कि सुसमाचार की अखण्डता पर समझौता न हो?

शुक्रवार **अक्टूबर 13**

अतिरिक्त अध्ययन: एलेन जी० ह्वाईट की किताबों को पढ़ें, *"ज्यू एण्ड जेन्टाइल"* पेज 188-192, 194-197; *"आपोस्टेसी इन गलातिया," पेज 383-388, द एक्टस् ऑफ अपोसल्स्; "द लॉ गीवन टू इजराएल", पेज 310-312; "द लॉ एण्ड द कॉवनेन्टस",* पेज 370-373, *पैट्रियर्क्स एण्ड प्रोफेट्स में; "द चोजन पीपल्स",* पेज 27-30, *द डिजायर ऑफ एजेस* में। कोई शक नहीं, हमारी कलीसिया विवाद और मतभेद के समयों का सामना करती है। लेकिन यह नया नहीं है। शैतान हमेशा कलीसिया के साथ युद्ध में है। यहाँ तक कि मसीहियत के प्रारंभिक दिनों में भी, विश्वासियों के ओहदों में मतभेद एवं विवाद खड़े हुए। और एक विवाद यदि समाधान नहीं किया जाये तो

कलीसिया को इसके प्रारंभिक अवस्था में बर्बाद कर देना।

"झूठे शिक्षकों के प्रभाव से, जो यरूशलेम में विश्वासियों के बीच से खड़े हो गये थे, विभाजन, अपधर्म एवं कामुकता गलातिया के विश्वासियों में तेजी से जड़ पकड़ रहा था। ये झूठे शिक्षक यहूदी परंपराओं को सुसमाचार की सच्चाई के साथ मिला रहे थे। यरूशलेम की सामान्य सभा के निर्णय को नजरांदाज करते हुए, वे अन्यजाति धर्म परिवर्तितों को विधि व्यवस्था को मानने के लिए उकसा रहे थे।" -*एलेने जी० ह्वाईट, द एक्टस ऑफ द अपोसल्स्,* पेज 383

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न :

- कक्षा में बुधवार के अंतिम प्रश्न के आपके जवाब पर चर्चा करें। किस प्रकार आपकी स्थनीय कलीसिया अथवा आप अपने घर में या हो सकता है आप स्वयं के साथ झूठे हैं जो दूसरों पर भारी पड़ता है जो अनावश्यक है? हम कैसे पहचान सकते हैं कि वाकई हम इन चीजों को कर रहे हैं? अथवा हम दूसरे रास्ते पर बहुत दूर जाने के खतरे में हैं? हम कैसे पहचान सकते हैं कि हम अपने जीवन शैलियों एवं मानदण्डों में बहुत लापरवाह हो गये हैं उस बिन्दू तक जहाँ पर हमारे जीवन महान बुलाहट को प्रतिबिम्बित नहीं करते जो मसीह में हमारे पास है।
- कुछ तर्क कौन-से हैं जिसे दल (समूह) दावा करता है कि दस आज्ञाएँ आज मसीहियों के लिए बंधन नहीं रह गये हैं? उन दावों के हम किस प्रकार उत्तर दे सकते हैं? ऊपर-ऊपर से क्यों ये तर्क गलत है और बहुत-से मामलों में क्यों जो इसे करते हैं वास्तव में रहते नहीं मानो कि दस आज्ञाओं को मानते हैं जो अब बंधन नहीं है?
- पुन: गलातियों 1:1-12 को पढ़ें। ध्यान दें पौलुस सुसमाचार के प्रति अपनी समझ पर कितना असमझौतावादी, हठधर्मी और उत्कृट था। वह हमें क्या बतलाना चाहिए इस विषय में कि हमें पूरी रीति से एक खास विश्वास में मजबूत खड़ा होना चाहिए, खासकर अनेकवाद एवं सापेक्षवाद के दिन एवं काल में? यह किस प्रकार दर्शाता है कि कोई भी शिक्षाएँ किसी हाल में जोखिम में डाली नहीं जा सकती?
- कक्षा में उन मुद्दों पर चर्चा करें जिन्होंने प्रोटेस्टेन्ट सुधार को लाया । कौन-सी मूल भिन्नताएँ सुलझ नहीं सकी है?